ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 July 2021

21 वी सदी में हिंदी साहित्य की उपादेयता: भाषिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलू

==========

डॉ. विनोद विश्वासराव पाटील

M.A., M.Ed., Ph.D.

dr.vinod.v.patil@gmail.com

==========

सारांश

भारत बहूभाषी देश है| हर एक प्रदेश/प्रांत की अपनी भाषा है| हर एक भाषा की अपनी बोलियाँ है| कहा जाता है की, 'चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी'| इस स्थिति में हर एक को अपनी मातृभाषा, प्रादेशिक भाषा का अभिमान होता है| अपने विचारों का आदान-प्रदान, आंतर-प्रादेशिक व्यवहार, व्यवसाय, लेन-देन, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समृद्धि का आदान-प्रदान इन सबका निर्वाह किसी एक ऐसी भाषा द्वारा हो सकता है, जो देश में अधिक से अधिक लोग जानते हो| भारत में यह स्थान सिर्फ हिन्दी भाषा ले सकती है| राष्ट्रभाषा के अभाव में राष्ट्र को गूँगा ही माना जाएगा| इसलिए हिन्दी ही भारतीयों की 'जनवाणी' है| भारत की विविधता में एकता तथा 'राष्ट्रीय ऐक्य' के लिए हिन्दी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है| इक्कीसवीं सदी की अगर हम बात करें तो आज हिंदी वैश्विक स्तर पर बोली और समझी जाने वाली भाषा बन चुकी है| भारत वैश्विक बाजार का केन्द्र बनता जा रहा है, इसलिए भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलू हिंदी साहित्य की उपादेयता बढाने में सहायक बनते जा रहे है| भारत की इक्कीसवीं सदी में उपादेयता बढानी है तो हिंदी साहित्य के अधुनातन अभ्यास और अनुसंधान की तथा समाज प्रबोधन की आवश्यकता है|

मुख्य संबोध

बहुभाषिकता, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलू, सजीव सृष्टि, विचार, आदान-प्रदान, उन्नत समाज, प्राचीन काल, आधुनिक काल, अनुसंधान, प्रबोधन

==========

- **प्रस्तावना**

भाषा के कारण सजीव सृष्टी के अन्य सजीवों से मनुष्यप्राणी भिन्न है | मनुष्यमात्र को प्राप्त भाषा का वरदान ही उसकी उन्नती का कारण है | मनुष्य की आज की प्रगती का आधार ही भाषा है| भाषा यह शब्द संस्कृत के 'भाष' धातु से बना है | जिसका अर्थ है बोलना | इसी कारण भाषा विशेषज्ञ सुकुमार सेन द्वारा लिखीत भाषा की परिभाषा कठद्वारा निकाले सार्थ ध्वनी समूह को भाषा कहते है, सार्थक प्रतित होता है | भाषा के कारण ही व्यक्ती के आपसी व्यवहार, विचारोंका आदान - प्रदान, भाव - भावनाओ का प्रकटीकरण होता है | इसी कारण ही आज का मनुष्य समाज इतना उन्नत, सुसंस्कृत दिखाई दे रहा है | भाषा सांस्कृतिक

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 July 2021

भाषा, बोलीभाषा, मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, प्रादेशिक भाषा, राजभाषा, आंतरराष्ट्रीय भाषा आदि रुपो मे प्राप्त होती है | किंतु रुप चाहे कौनसा भी हो, हर एक रुप का अपना-अपना महत्वपूर्ण स्थान होता है |

- **शोध विषय विवेचन**

व्यक्ति विकास का संबंध राष्ट्र के विकास से होता है | मानवी सभ्यता, आचार-विचार, रहन-सहन, खान-पान, ज्ञान-विज्ञान आदि के प्रति होनेवाला ज्ञान आज भी भाषा के कारण सुरक्षित है | अपनी भाषा के कारण ही सांस्कृतिक विशेषता, सभ्यता, संस्कार एक दुसरे को प्राप्त होने का कारण जीवन सुखी और समृध्द बनता है | क्योंकि, संस्कृति और सभ्यता का भाषा के साथ गहरा संबंध होता है | इसी कारण भाषा का रुप कौनसा भी हो भाषिक विकास ही संस्कृति और सभ्यता के विकास तथा पतन के मानदंड होते है | इसलिए व्यक्ति और राष्ट्र के विकास मे भाषा का महत्वपूर्ण स्थान होता है |

चार कोस पर पानी बदले | आठ कोस पर बानी

यह दो ही पंक्तियाँ हमारे देश के बहुभाषिकता की प्रमाण है | यहाँ पर एक हजार के आसपास भाषाएँ बोली जाती है | भारतीय संविधान ने प्रथम पंद्रह भाषाओ को मुख्य भाषाके रुप मे स्विकार किया था | आज वह संख्या बाईस हुई है | उसमे 1) आसामी 2) बंगाली 3) वोडो 4) डोंगरी 5) गुजराथी 6) हिंदी 7) कन्नड 8) कश्मिरी 9) कोकणी 10) मौथिली 11) मल्यालम 12) मणिपूरी 13) मराठी 14) नेपाली 15) उडिया 16) पंजाबी 17) संस्कृत 18) संथाली 19) सिंधी 20) तामिल 21) तेलगू 22) उर्दू

वैसे देखा जाय तो, विश्व मे अनेकानेक भाषिक देशो की कमी नही है, किंतू इस भाषिक विविधता के कारण यहाँ पर समस्याओंकी भी कमी नही है | भारत एक खंडप्राय देश होने के कारण इस देश मे विविध जाती, धर्म, पंथ के लोगो मे अपनी भाषिक विशेषता के साथ साथ खान-पान, रहन सहन, आचार-विचार मे भी भिन्नता पायी जाती है |

विविधता मे एकता का प्रमाण देनेवाले हमारे विस्तृत देश की एकता और अखंडता के लिए इन सभी को एकसुत्र मे बाँधकर रखना भी जरुरी है | क्योंकि, विशाल राष्ट्र मे आपसी प्रांतवाद, भाषावाद, सीमा संघर्ष, धार्मिक मान्यताएं आदि को लेकर विवाद उत्पन्न होना अत्यंत स्वाभाविक है| किंतू अंत मे देश की सुरक्षितता और स्वातंत्रता सबसे महत्वपूर्ण होती है | इसलिए 'हम सब एक' की भावना को बढावा देने के लिए, आपसी भेदभाव मिटाने के लिए एक राष्ट्र गीत, एक राष्ट्रध्वज, एक राष्ट्रभाषा ये किसी भी देश के गौरव का प्रतिक होते है | राष्ट्र के अभिव्यक्ती का माध्यम इसकी अपनी भाषा होती है जो राष्ट्रभाषा कहलाती है |

राष्ट्रभाषा के अभाव मे किसी राष्ट्र की कल्पना असंभव होती है | क्योंकि व्यक्ति के जीवन मे जो स्थान मातृभाषा का होता है, वही स्थान राष्ट्र के जीवन में राष्ट्रभाषा का होता है | भाषा के अभाव मे राष्ट्र गुँगा होता है | राष्ट्रभाषा राष्ट्र की वाणी होती है | राष्ट्र की सभी भाषाओं की तुलना मे राष्ट्रभाषा का स्थान उँचा होता है| प्रादेशिक भिन्नता के कारण देश की एकता और खंडता के लिए सभी को एकसुत्र मे बाँधने का काम राष्ट्रभाषा

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 July 2021

करती है | सार्वत्रिक और संवैधानिक तौर पर हमने हिंदी को राष्ट्रभाष का दर्जा भले ही ना दिया हो लेकिन हिंदी ही राष्ट्रभाषा की अकेली दावेदार है यह सब जानते है | इसी कारण हमने हिंदी को 14 सितंबर 1949 को राजभाषा के तौर पर सार्वत्रिक रूप में स्वीकार किया है | इसके प्रमुख अनेक कारण है, हिंदी भारत में सर्वाधिक लोगो द्वारा बोली और समझी जानेवाली भाषा है तथा वह अपने ही देश की भाषा है और अपनी ही भाषा के माध्यम से व्यक्ती और राष्ट्र की उन्नती होगी, इस संदर्भ मे हिंदी साहित्य के जेष्ठ साहित्यिक डॉ. भारतेंदू हरिशचंद्रजी ने सही कहा है कि,

निजभाषा सब उन्नती को मूल | बिन निजभाषा ज्ञान के मिटे न हिये को सूल |

हमने हिंदी को मन से राष्ट्रभाषा के रुप मे स्विकार किया क्योंकी वह भाषा राष्ट्रभाषा की हकदार होती है | जो हमारी अपनी हो, उसे बोलने और समझनेवालो की संख्या अधिकाधिक हो, हिंदी भाषा बोलनेवाले की संख्या आज लगभग 65 प्रतिशत है | जिसका साहित्य विपुल हो, जो आपसी संपर्क के लिए आसानी से उपयोग मे लायी जाए, और इन सभी विशेषताओं से हिंदी भाषा परिपूर्ण होने के कारण उसका हमारी राष्ट्रभाषा के नाते सम्मान करना उचित ही नही सर्वथा योग्य है | साथ ही मे हिंदी हमारी राजभाषा भी है, राजभाषा का अर्थ है, देशे के विभिन्न राज्य तथा केंद्र के दरम्यान होनेवाले परस्पर संबंध, पत्राचार, सलाह-मशवहरा, मार्गदर्शन, सूचना तथा शिफारशो के लिए एक सर्वसमावेशक भाषा के रुप मे हिंदी को अपनाया गया है |

हिंदी भाषा का महत्व और आवश्यकता को ध्यान मे लेते हुए स्वतंत्रता पूर्व से ही हमारे नेताओंने हिंदी भाषा का समर्थन किया है | इसमे बंगाल मे केशवचंद्र सेन, गुजरात मे दयानंद सरस्वती तो महाराष्ट्र मे लोकमान्य तिलकजी ने केसरी नामक समाचार पत्र हिंदी मे प्रकाशित करते हुए जनजागरण का कार्य किया| इस कार्य मे हमारे साहित्यिक भी पिछे नही थे | राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रभक्ती से ओतप्रोत साहित्य का निर्माण करके उन्होने अपना योगदान दिया है | आज हिंदी के प्रचार और प्रसार के कार्य मे रेडिओ, दूरदर्शन तथा सिनेमा इन्होने बहुत बडा योगदान दिया है| इसी कारण हिंदी फिल्मो के गीत, भजन, कविता, गझल, शेरो-शायरी के लिए हम हिंदी को ही प्रथम पसंद करते है | हिंदी मे लिखित साहित्य अत्यंत संपन्न है | इसमे कहानी, उपन्यास, चरित्र, आत्मकथा, प्रवास वर्णन, विज्ञान कथा, गजले, ऐतिहासिक लेखन, आध्यात्मिक लेखन, विभिन्न विषयो से संबंधीत कविताओं की उपलब्धता से हिंदी साहित्य का सागर समृध्द है |

प्राचीन काल से लेकर आजतक के हिंदी मे लेखन करके हमारे लेखकों ने सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक आदि अनेकानेक विषयो से संबंधित लेखन करके मनोरंजन के साथ-साथ समाजप्रबोधन का कार्य किया है | इसका उत्तम उदाहरण प्रेमचंदजी की कहानियाँ और उपन्यास है | जिसमे उन्होने अनेक सामाजिक समस्याओं को लेकर समाज मे जनजागरण का कार्य किया है | इसमे सिर्फ हिंदी भाषिक लोगो का

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 July 2021

ही योगदान नही है | अहिंदी प्रदेशो के लोगोंने भी हिंदी में लेखन कार्य करके हिंदी को समृध्द बनाने का प्रयास किया है | उनका यह कार्य विशेष उल्लेखनिय है|

स्वतंत्रतापुर्व प्राचीन काल से आजतक इसी योगदान का परिचय हम अध्यापक, छात्र तथा हिंदी भाषी प्रेमियों को होना आवश्यक है | हमारे लेखको ने समाज जागरण, अंधश्रध्दा निर्मुलन, समाज विकास, देशप्रेम, राष्ट्रीय एकात्मता, बंधुभाव आदि कई विषयो को लेकर उनके लेखन कार्य से परिचय कराकर हिंदी साहित्य के प्रति रुचि बढाने के लिए साहित्य लेखन किया है | विशेष रूप से मनोरंजन, राष्ट्रप्रेम, संस्कृति संवर्धन, ज्ञान का विस्तार तथा आनंदानुभूती के प्राप्ती के लिए साहित्यकार एवं उनके हिंदी साहित्य की भुमिका महत्वपूर्ण रही है |

संत कबीर, तुलसीदास, सूरदास इन हिंदी कवियों और साहित्यकारोने समाज प्रबोधन मे बहुत बडा योगदान दिया है | इश्वर के नामपर समाज को लुटनेवाले लोगो पर संत कबीरने तिखा प्रहार किया है | वैसे ही अगर हम उपन्यास सम्राट मून्शी प्रेमचंद के साहित्य का विचार करे तो हमे नजर आएगा की उन्होने अपने साहित्यमे सामाजिक समस्याओंको लक्ष्य बनया है | इतनाही नही तत्कालिन समाज मे उन्होने स्त्रीयों के विरुध्द हो रहे अत्याचारो का विरोध अपने साहित्य के द्वारा किया नजर आया है | निर्मला, कफन, गबन, ठाकूर का कुँवा, सेवासदन, गोदान आदि साहित्यकृतियों के माध्यमसे उन्होने समाज मे निहित संकुचित समस्योको उखाडने कार्य किया है |

भारतीय आज़ादी मे हिन्दी साहित्य का योगदान तो अवर्णित है | आज़ादी के लिए मर मिटने का जजबा लोगो मे हिन्दी ने जगाया था | ऐसे कई हिन्दी साहित्यिक हो गए जिन्होने सिर्फ अपनी कविताओं एवं लेखो के माध्यम से लोगो को घर से बाहर आजादी के लिए निकाला| निराला, महादेवी वर्मा, रामचंद्र शुक्ल, मौथिली शरण गुप्त, यशपाल, राकेश मोहन, रामवृक्ष बेनीपूरी, निर्मल वर्मा आदि ऐसे कई हिन्दी साहित्यकार हो गए जिन्होंने सामाजिक चेतना को जगाया और समाज को प्रगती की एक नई दिशा देने का प्रयास किया |

हिन्दी भाषा और साहित्य मे वह शक्ती है जो हर युग मे समाज को सूरज की तरह उजाला देता रहेगा | हिन्दी साहित्य की परंपरा इतनी सशक्त, पूरानी और उज्वल है की, वह युगो-युगो तक बढती ही रहेगी | आज के तंत्रज्ञान एवं आधुनिक युग मे हिन्दी साहित्य उतना प्रभावी है, जितना हर सदी मे रहा | क्योंकि, हिन्दी साहित्य मे जो विचार है वह हर समाज को दिशा देने की शक्ती रखते है | कबीर के विचार आज भी दिशा दे रहे है | प्रेमचंद का साहित्य आज की समस्याओ से भी जूडता है | जरुरत है आज हिन्दी साहित्य के सही अभ्यास और संशोधन की और हिन्दी साहित्य का समाज प्रबोधन मे सही उपयोग करनेवालो की |

- **निष्कर्ष**

1. भारत एक खंडप्राय देश होने के कारण इस देश मे विविध जाती, धर्म, पंथ के लोगो मे अपनी भाषिक विशेषता के साथ साथ खान-पान, रहन सहन, आचार-विचार मे भी भिन्नता पायी जाती है |

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 July 2021

2. अपने विचारों का आदान-प्रदान, आंतर-प्रादेशिक व्यवहार, व्यवसाय, लेन-देन, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समृद्धि का आदान-प्रदान इन सबका निर्वाह आज भारत वर्ष में सिर्फ हिंदी भाषा द्वारा ही हो सकता है|

3. हिन्दी साहित्य मे जो विचार है वह हर समाज को दिशा देने की शक्ती रखते है | कबीर के विचार आज भी दिशा दे रहे है | संत कबीर, तुलसीदास, सूरदास इन हिंदी कवियों और साहित्यकारोने समाज प्रबोधन मे बहुत बडा योगदान दिया है |

4. प्रेमचंद का साहित्य आज की समस्याओ से भी जूडता है | जरुरत है आज हिन्दी साहित्य के सही अभ्यास और संशोधन की और हिन्दी साहित्य का समाज प्रबोधन मे सही उपयोग करनेवालो की |

5. भारत की इक्कीसवीं सदी में उपादेयता बढानी है तो हिंदी साहित्य के अधुनातम अभ्यास और अनुसंधान की तथा समाज प्रबोधन की आवश्यकता है|

❖ संदर्भ सूची

1. कैलाशचंद्र भाटिया, मोतीलाल चतुर्वेदी, हिंदी भाषा: विकास और स्वरुप, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

2. प्रो. सत्यनारायण त्रिपाठी, हिंदी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

3. डॉ. भोलानाथ तिवारी, हिंदी भाषा का इतिहास, वाणी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

4. डॉ. विनोद पाटील, (2008), हिन्दी शिक्षा : एक आधुनिक दृष्टीकोन, इनसाईट पब्लिकेशन्स, नासिक

5. अग्रवाल जतिन, (1998), राजभाषा और राष्ट्रभाषा, शांति प्रकाशन, कानपुर

6. पाटील विनोद, (2015), हिंदी अध्यापन पद्धति, अथर्व पब्लिकेशन्स, जलगाँव

7. 'इंटरनेट पर चमक रही हमारी हिंदी, दैनिक जागरण, 1 मार्च 2019/वाया गूगल साईट

8. विमल, गंगा प्रसाद, (1 मार्च 2018), हिंदी की विश्वव्याप्ती, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

9. www.hindi.sahityapedia.com/मंजू बंसल/लेख/हिंदी भाषा वर्तमान संदर्भ में/Sept. 26/2017

10. www.bharatdiscovery.org/India/लेख/हिंदी का राष्ट्रभाषा के रूप में विकास

11. www.bharatdiscovery.org/हिंदी- भारतकोश, ज्ञान का हिंदी महासागर

12. www.onehourtranslation.com/translation/blog/importance-hindi

13. www.essayinhindi.com / essay - on - the - importance - of - hindi - literature-in-indian-society

14. www.wikipedia.org/hindi language

15. www.hindi.webdunia.com/role-of-hindi-as-social-language